REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2019

महादेवी वर्मा और इंदिरा संत के काव्य में अभिव्यक्त प्रेमानुभूति

प्रा. सौ. अल्पना हिरालाल कुऱ्हाडे
शोध-छात्रा

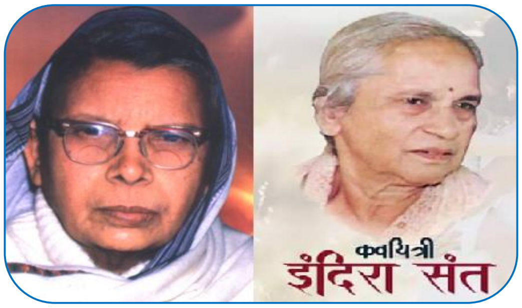

प्रस्तावना :-

प्रेम की दशा में स्त्रियाँ कैसा अनुभव करती है यह सदा से मनुष्य की उत्सुकता का प्रधान विषय रहा है। सबसे अजीब बात यह है कि, वे जिस प्रकार अनुभव करती है उसी प्रकार व्यक्त भी नहीं करती। काव्य की भावभूमि पर नारी प्रकृति की जो स्वच्छंद मर्यादापूर्ण, पवित्र वैयक्तिक प्रेम-भाव और उसकी विरह वेदना महादेवी वर्मा और इंदिरा संत (मराठी भाषा की कवयित्री) के काव्य में पाई जाती है। वह उनका अपना मौलिक गुण है। समकालीन कवियों में दोनों ऐसी रचनाकार है, जो समकालीन काव्य से प्रभावित जरूर है लेकिन अपना प्रेम और प्रेम से व्युत्पन्न वेदना को लेकर। दोनों कवयित्रियों के काव्य में अभिव्यक्त प्रेमानुभूति निम्नलिखित है।

कवयित्री महादेवी वर्मा की प्रेमानुभूति :-

महादेवी वर्मा एक कुशल कवयित्री है जिसका जीवन- काव्य प्रेम रहा और संपूर्ण साधना प्रेममयी। छायावादी कवियों में महादेवी वर्मा कई कारणोंसे विशिष्ट है। उनकी विशिष्टता का कारण एक तो यह है कि, उन्होंने अपने गीतों में अभिव्यक्ति के लिए जिस भावभूमि को चुना, उसी भावभूमि पर प्रारंभ से अंत तक बनीं रहीं। अर्थात प्रारंभ से अंत तक उनकी काव्य-कृतियों में जो प्रतिपाद्य या वर्ण-विषय उभरकर सामने आया है, वह प्रेम और वेदना के ईर्दगिर्द ही घूमता है। अतः महादेवी के काव्य में अभिव्यक्त प्रेम का विवेचन निम्नलिखित है -

महादेवी मनोभावों में डूबने के साथ ही साथ उनके कायिक परिवर्तनों की सजीव मूर्तियाँ भी अत्यंत कुशलता से प्रस्तुत करती है। इतना ही नहीं महादेवी के काव्य में जो वेदनामय सरसता और माधुर्यभाव, रहस्यवाद है, वह प्रेम-भाव से संपृक्त होने के कारण हिंदी कविता के लिए एक नूतन योगदान है। महादेवी के काव्य में अभिव्यक्त प्रेम अपने दार्शनिक परिवेश में अलौकिक और व्यावहारिक संघर्ष में लौकिक प्रतित होता है। अतः उसे लौकिक ही कहना उचित नहीं और सांकेतिक भूमिका में तो वह अलौकिक है ही इसी से यह रहस्यमय है।

यहीं है महादेवी के काव्य में प्रेम का अपना एक अलग अंदाज! इसका कारण मुख्यतः यह है कि, महादेवी ने जीवन और जगत सें ग्रहण किये गये अनुभवों को आत्मसंयम, सहिष्णुता और अमर-प्रेम के संदेश के रूप में स्वीकार किया है। इस संबंध में डॉ. रेनु दीक्षित का कथन है इ

"किसी जीवन की मीठी याद लुटाता हो मतवाला प्रात।
अली अलसायी आँखे खोल सुनाती हो सपने की बात"

जीवन की यह मीठी याद उनकी किशोरावस्था की वे मधुर स्मृतियाँ जब माता-पिता के संरक्षण में थी, उन्हें दुलार-स्नेह, प्रेम मिला था। किसी अभाव ने उन्हें दुःखी नहीं किया था। जीवन में प्रवेश करने के बाद पीडा का वरदान मिला और उसे उन्होंने अव्यक्त की देन के रूप में स्वीकार लिया। बाल्यावस्था की सुखद स्मृतियाँ स्वप्न की बात सुना रही है जो अब मात्र कल्पना है। कुछ ऐसा ही आभास पाकर श्रीमती. शचीरानी गुर्टू यह तथ्य प्रकाशित करती है-

"माता- पिता की स्नेह-छाया में अबोध शैशव बिताकर जीवन की कठोर वास्तविकता जब उनकी बुद्धि के सयानेपन से ठुकराई तो अनमिल भावनाओं के कारण दो भिन्न हृदय प्रेम-सूत्र में न बँध सके और तभी से उनके मानस में नीरवता, बेचैनी और धुँधलेपन की छाया

परिव्याप्त हो गई। यौवन के तूफानी क्षणों में जब उनका अल्हड हृदय किसी प्रणयी के स्वागत के लिए मचल रहा था और जीवन-गगन के रक्ताभ पर स्नेह-ज्योत्सना छिटकी पड रही थी तभी अकस्मात विफल प्रेम की धूप खिलखिला पडी और पुलकते प्राणों की धूमिलता में अस्पष्ट रेखाएँ-सी अंकित कर गई। आत्मसंयम का व्रत लिये हुए उन्होंने जिस लौकिक प्रेम को ठुकराकर पीडा को गले लगाया वह कालांतर में आंतरिक शीतलता से स्नात होकर बहुत-कुछ बिखर तो गई किंतु उनके हठीले मन का उससे कभी लगाव न छूटा और वह उसे निरंतर कलेजे से चिपकाये रखने की मानो हठ पकड बैंठी।"

इस प्रकार यह भाव, तन्मयता, प्रेम, प्रेम की असफलता लौकिक आलंबन के सहारे व्यक्त करना तथा उनकी आत्मा ने प्रेम का वह मधुर संबंध जो प्रेमी-प्रेमिका के मध्य चलता है, केवल उसेही आत्मसात करते हुए उस समय कोमलतम्, मधुरतम काव्यमयी भावनाएँ अंतर्मन के किसी निगूढ कोने से निकलकर चुपके से महादेवी के होठों पर आ बैठी और उसमें से कुछ गीत बन गई। और कुछ मौन भाव से प्रेमास्पद के मधुर इंगितों को अपलक निहारती रही है। महादेवी की मुग्धावस्था का यह एक आकर्षक चित्र-

"चल चितवन के दूत सुना
उनके, पल में रहस्य की बात,
मचा गये क्या क्या उत्पात।"

अर्थात कवयित्री प्रियतम पर मुग्ध तो है लेकिन रहस्य की बात कहते हुए उत्पात मचाने की बात भी करती है यह सब महादेवी का अपना प्रेम ही तो है जो प्रेममयी कोमलतम् मधुरतम् काव्यमयी भावना का नाम धारण करता है। जैसे- "कैसे कहती हो सपना है अलि !

उस मूक मिलन की बात ?
भरे हुए अब तक फूलों में
मेरे आँसू उनके हास।"

मूक-मिलन को सपनों में संबोधित करना महादेवी को स्वीकार नहीं क्योंकि फूलों के पात्र में उनके आँसू दिखाई दे रहे है। इस तरह कवयित्री महादेवी अपने काव्य में लौकिक आलंबन को लेकर चलती है लेकिन मार्ग में संयोग और वियोग / मिलन- विरह के अवसर आते है, प्रिय का चुंबन मन को चौकाता है, जीवन सूनेपन से भर जाता है।

'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत' और 'दीपशिखा' महादेवी की काव्य यात्रा के चरम चिह्न है। नीरजा में पहुँचकर महोदवी दुख का साथ सुख का अनुभव करती है यहीं भावना 'सांध्यगीत' में और परिष्कृत रूप में व्यक्त हुई है। अब उन्हें अपने हृदय में उस अज्ञात प्रियतम की झलक स्पष्ट प्रतीत होती है। गोपियों की कृष्णोपसना भी इसी रूप की थी। इसीलिए वे कृष्ण के निकट थी। महादेवी की प्रेम भावना भी माधुर्य भाव से ही अपने प्रियतम को भजती है। वे नारी है और नारी के लिए इससे का अधिक प्रेमाभिव्यक्ति स्वाभाविक मार्ग दूसरा नहीं हो सकता। यह भी एक कारण है की, उन्होंने ब्रह्म को प्रियतम का रूप दिया है।

कवयित्री महादेवी वर्मा के चरित्र / व्यक्तित्व का अध्ययन कर एक यथार्थ सामने आ जाता है कि, महादेवी का वास्तविक प्रेमी तथा प्रियतम कोई नहीं रहा। एक तो माँ के कारण भक्ति तथा अध्यात्मिकता से संस्कारित थी। इसलिए तो बचपन में ही कृष्णभक्ति में पद रचना की। दूसरे युवावस्था में ही पारिवारिक जीवन से दूर बौद्ध भिक्षुणी बनने चली गई थी। तिसरे पति सत्यनारायण वर्मा के गृहस्थ जीवन के प्रस्ताव को वह अपनी इच्छा से ठुकरा चुकी थी। इस तरह स्पष्ट हो जाता है कि, महादेवी का कोई ज्ञात प्रियतम / प्रेमी ही नहीं था। क्योंकि वह अज्ञात ही रहा। महादेवी में चिंतन की सूक्ष्मता स्वाभाविक रूप में है इसलिए लक्ष्मणदत्त गौतम कहते है-

"यह चिंतन केवल अध्ययन गत नहीं है,
इसमें मनन का बहुत बड़ा योग है।"

अर्थात कवयित्री भावलोक में चिंतन और मनन की सहायता द्वारा अपने उर में समाई प्रेमानुभूति, अपना ही त्याग अपनी ही एकाग्र-चित्त साधना, प्रियतम के लिए अपने को ही मिटा देने की भावना उसे पा लेने के साधन है। ये तो अपने प्रियतम की निष्ठुरता से ही परिचित है, जिसे पाने की कामना बनी रही- 'जो तुम आते एक बार'। उनका प्रिय निर्मम भले ही हो पर उसे प्रेम करती ही रहेगी चाहे उसे इसका प्रतिदान उन्हे न मिले। ऐसे अभिशाप की छाया में उनका प्रणय व्यापार चलता है।

इस तरह कवयित्री महादेवी लौकिक प्रेम की पूर्ति अलौकिक प्रेम को साधन के रूप में स्वीकारते हुए करती है। अत: चाहे जो भी साधन हो प्रेम तो प्रेम ही होता है। यह प्रेम कभी अपनी लौकिकता तो कभी अलौकिकता के प्रति अपनी कटिबद्धता दिखाता है

कवयित्री इंदिरा संत की प्रेमानुभूति :- इंदिरा संत मराठी काव्य-साहित्य में कोमल भावनाओं को कविता रूप प्रस्तुत करनेवाली कवयित्री है। श्री वा.ल. कुलकर्णीजी ने इंदिरा संत का काव्य-साहित्य की विशुद्ध भावकविता नाम से गौरव किया हैं। इंदिरा संत के पहले / पूर्व मराठी साहित्य में अनेक प्रेमकविताओं का निर्माण हो गया है। इंदिरा संत का काव्य इन सब में अपना अलग अस्तित्व बनाये हुए है।

श्री. वा. ल. कुलकर्णी का मंतव्य है- "मराठी भावकालीन की भीड में इंदिराजी के कविताओं में सजीवता है। अन्य कवितायें अतिरेकी भावविवशता, नाटकीयता से अपना मूल अस्तित्व बनाये रखने में सफल रहा है।"

अर्थात मराठी कविता प्रवाह में इंदिरा संत की कवितायें सजीव प्रेम का प्रदर्शन कराती है। युग में परिवर्तन हो गया। अन्य कवियों की कविता युगानुरूप बदलती गयी लेकिन इंदिरा संत का काव्य अपने ही परिधि में रहा। प्रेम-भाव के साथ-साथ विरह-वेदना भाव का वर्णन काव्य में हुआ यह परिवर्तन की निशाणी है।

कवयित्री इंदिरा संत का संपूर्ण काव्य जिस प्रेम-भाव पर आधारित है वह प्रेम अत्यंत उच्चकोटि का वैभवशाली प्रेम है। यह काव्य प्रेयसी-प्रियतम के मधुर संबंधों की, लौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति है। उसमें प्रियतम न कल्पित है न आरोपित, न सपनों का राजकुमार, वह है उनके जीवन की एक मधुरतम् सच्चाई। कवयित्री के शब्दों में-

'प्रीत'

"सुकुमार माझी प्रीत
रानातल्या फुलावाणी
नको पाहूं तिच्याकडे
रागेजल्या नयनांनी

लाजरी ही माझी प्रीत
लाजाळूंच्या रोपाहून
नको पाहू वाट तिची,
तूच घेई ओळखूनी"

यह है प्रेम-भाव की सुकोमलता। यह प्रीति तो लजालू के पौधे से भी अधिक संवेदनशील है। मुग्ध प्रणय-भावना शांत स्थिर तथा अविरल रूप से बहते निर्झर सदृश्य है। मराठी के ज्येष्ठ कवि यशवंत का प्रभाव रहा है। इन दिनों में कवि अनिल ने प्रेमभावना की अभिव्यक्ति के लिए ओवी / छंद रचना का अनुसरण किया। फिर भी भावोत्कटता और अभिव्यक्ति की सहजता के साथ गागर में सागर भरने की वृत्ति 'सहवास' इस आरंभिक काव्यसंग्रह से ही इंदिरा संत में दिखाई देती है। एक उदाहरण-

"तुझा सहवास, जसा पहाटेचा वारा
फुले फुल झरझरा"

कवयित्री की संतृप्त प्रेमभावना की झलक 'सहवास' की कविताओं में अभिव्यक्त हो गई है। पारिवारिक जीवन में मग्न कवयित्री की 'चाहुल', 'ये रे ये रे', 'दातकणी', 'प्रतीक्षा', 'बाळ होता रांगला', 'या हो सूर्यनारायणा', 'गाई गाई', 'चिमुकले डबके' आदि कविताओं में कवयित्री की प्रेम-मग्नता दिखाई देती है। कविताओं में मांसलता नहीं है, शब्दों के आधार से भावनाओं की अभिव्यक्ति की है। उदा- नाहीस तू मज गडे गमते उदास, 'तुझे पत्र', 'माझी प्रीति', 'स्नेहाकर्षण', 'अधिरून गेले मन' आदि।

कवयित्री इंदिरा की कुछ ही कवितायें है, जिसमें मुग्ध-प्रेम का दर्शन हुआ है। ये कवितायें दो तृप्त मन, शरीर के दांपत्य की भावनायें है-

"'तुझे ते पाकिट जाडे निळे'
थरकल्या नसांतुनि नाजुकशा भावना
उसळल्या मनांतुनी रम्य अशा कल्पना
मिटुनी लोचनें, हृदयाशी ते धरिलें आनंदुन
सुखद अन मादक किती तो क्षण।"

प्रेयसी-प्रियतम् संबंध की मधुर प्रणय भावाभिव्यक्ति के साथ प्रेमी युगल के स्वतंत्र साम्राज्य की कल्पना आंतरिक भावों को और भी अधिक तीव्र तथा मार्मिक रूप में ध्वनित करती है। इंदिरा संत प्रेमकविता के संदर्भ में कहती है-

"प्रेम बसल्यावर फारशा कविता मी लिहिल्या नाहीत. दहा-बारा असतील. लग्नापूर्वी चार-पाच लिहिल्या. पण कविता जगलो म्हणायला हरकत नाही. आलंकारिक भाषेत बोलायचं तर कविता लिहिण्यापेक्षा ती चाखावी, अनुभवावी असच वाटायला लागलं. आमचा कोणताही अनुभव एकमेकांशिवाय पुराच होत नव्हता. आणि दहा वर्षांनंतर सहवास संपला. त्यांची (संतांची) अनुपस्थिती मला सोसायची होती.

कामं, जबाबदाऱ्या सगळं होतच. पण त्यांची अनुपस्थिती सतत जाणवायची आणि त्या वेळेला मला कवितेचा आधार मिळाला. पण दुःखाच्या आघातानंतर लगेचच मी काही लिहिलं नाही. नंतर हळूहळू लिहायला लागले."

इस प्रकार कवयित्री ने निरंतर वर्तमानकाल का साथ दिया है। जो कुछ प्रेम-अनुभव किया वही अभिव्यक्त किया। कविता ने भी कवयित्री के जीवन के साथ-साथ मार्गक्रमण किया है। बिमारी में पति नारायण संत की मृत्यु हुई और इंदिरा संत पर मानो दुःखों का पहाड टूट पडा। जितना प्रेम उतना दुःख और उतनी बडी जिम्मेदारियाँ आ गई। एक समय तो ऐसा रहा इंदिरा संत ने कहा- "दुःख करायला मला सवडच नसते, हसण्याची वावटळ शरीरात सुरू झाली की सगळा साठवलेला पालापाचोळा उडून जाऊन मन कस प्रसन्न होतं."

ऐसे समय / अवसर पर कविता ने इंदिरा का साथ निभाया। प्रेम उनके काव्य की आत्मा है। अपने पति के प्रति हृदय की विशुद्ध प्रेम-भावना की अभिव्यक्ति के लिए उन्हें प्रकृति की पृष्ठभूमि आवश्यक लगती है। प्रीति की मधुरता की अपेक्षा उसकी दाहकता ही अब विशेष रूप से अनुभव की वस्तु हो गई है। 'सहवास' तो एक शुरूआत थी लेकिन बाद में 'शेला' में 'तू' अर्थात 'प्रियकर' कवयित्री के भावविश्व का केंद्र तो 'मेंदी' में 'मी' अर्थात 'मैं' और 'मृगजळ' में तटस्थ वृत्ति की अभिव्यक्ति है। 'रंगबावरी', 'बाहुल्या' से होकर यह प्रेमकविता 'निराकार' में पूर्णतः अलौकिकता धारण करती है।

'सहवास' के पश्चात प्रेमिका इंदिरा संत के जीवन में दुःख का प्रवेश हो गया। प्रेम से व्युत्पन्न इस दुःख को व्यक्त करने के लिए कविता का आधार लिया और प्रेमिका कवयित्री के मन की प्रेममयी सतेज भावना कायम रही है। कष्ट, त्याग और काल को पति-प्रेम में बाँधकर जीवन में जैसे अनुभव आते गये, उन्हीं को वैसे ही स्वीकारा है।

इस प्रकार पति प्रियतम के प्रति प्रेम सहजता से अलौकिकता धारण कर कवयित्री को निराकार तक पहुँचाता है। इंदिरा संत ने पति की मृत्यु की छाया से बाहर आने का प्रयत्न किया है फिर भी पूर्णतया मुक्त नहीं हुई, मन में प्रेम को सदैव संजोये रखा। अर्थात इंदिरा संत और कवयित्री दोनों का प्रेम एक ही है जो एक सामान्य स्त्री का प्रेम है। जिसमें मृत पति / प्रियतम नारायण संत को कविता में लाकर अभिव्यक्त कर अमर बना दिया है।

विश्लेषण :-

कवयित्री महादेवी वर्मा के काव्य में प्रेम का जो स्वरूप अभिव्यक्त हुआ है वह वियोग शृंगार के अंतर्गत आता है। जो दशा गोपियों की कृष्ण के वियोग में कृष्ण के प्रति प्रेम के कारण होती है और जिसका विशद वर्णन सूर में हमें मिलता है। वैसी ही दशा प्रियतम के लिए कवयित्री अनुभव करती है। उनकी एक ही दशा निरंतर बनी रहती है। इससे विपरीत इंदिरा संत के काव्य में अभिव्यक्त प्रेमानुभूति है। इंदिरा संत अपने काव्य में अपने प्रियतम के प्रति प्रेम और प्रेमानुभूति को स्वाभाविक रूप में अभिव्यक्त करती है। कवयित्री इंदिरा और प्रियतम / पति नारायण संत का 'सहवास' काव्यसंग्रह तृप्त मन की अभिव्यक्ति है।

महादेवी अपने प्रियतम की याद में इतनी तन्मय रहती है तथा बेसुध हो जाती है कि उन्हें कुछ ही ज्ञान ही नहीं रह जाता। उनका प्रिय आया भी और लौट गया पर उसे वे पहचान न सकी। इस प्रकार प्रेम की अभिव्यक्ति का प्रमुख कारण प्रेमी का अज्ञात होना ही है। मूलतः अज्ञात होना ही प्रियतम की निर्वैयक्तिकता है ऐसी स्थिति में अज्ञात, विराट, अनंत, सर्वव्यापि प्रियतम है क्या और नहीं क्या कोई फर्क नहीं पडता। लेकिन इंदिरा संत की दशा प्रेम में 'एक तू जो मिला सारी दुनिया मिली' वाली स्थिति हो जाती है। यह मन की बडी स्वाभाविक दशा है।

निष्कर्ष महादेवी वर्मा और कवयित्री दोनों का प्रेम एक ही है और उसकी अनुभूति भी तो एक ही है। सामान्यतः जो एक स्त्री की होती है। महादेवी के काव्य में अभिव्यक्त, प्रेमानुभूति वैयक्तिक संदर्भों से अलग कर अमूर्त रूप में व्यक्त हो गई है तो इंदिरा संत के काव्य में बिल्कुल सहज एवं स्वाभाविक है। कवयित्री महादेवी के काव्य में अभिव्यक्त प्रेम तो मिलन-विरह के दो पुलिनों के बीच अज्ञात के प्रति प्रेमभाव का सुंदरतम् रूप काव्य-जगत् की अमूल्य निधि है।

कवयित्री इंदिरा संत के प्रेम का लौकिक रंग इतना और इस हद तक गहरा है कि, जीवन के अंतिम दिनों में कवयित्री निराकार तथा अलौकिक प्रेम स्वरूप को अभिव्यक्ति प्रदान की है जिसमें प्रियतम और प्रेमिका की प्रेमलीला जिंदगी के साथ भी और जिंदगी के बाद भी व्यक्त हुई है।

संदर्भ :-

1) डॉ. लक्ष्मणदत्त गौतम- महादेवी वर्मा कवि और गीतकार
2) शचीरानी गुर्टू- महादेवी वर्मा
3) डॉ. रेनु दीक्षित- महादेवी वर्मा की काव्यानुभूति
4) संपादक- निर्मला जैन- महादेवी साहित्य- खंड-एक
5) संपादक- प्रा. रमेश तेंडुलकर- मृण्मयी
6) इंदिरा संत- सहवास

7) इंदिरा संत- शेला
8) इंदिरा संत- मेंदी
9) डॉ. सुलभा हेर्लेकर- प्रीति आणि प्रतिमा